

**अहमेव** पुं. (तत्.) 1. मैं ही 2. अहंकार, गर्व, घमंड।

**अहम्** पुं. (तत्.) दे. अहं।

**अहम्मन्य** वि. (तत्.) अपने को बहुत बड़ा, ऊँचा या योग्य मानने वाला, अपने को औरों से बढ़कर समझने वाला, अहंकारी।

**अहरणीय** वि. (तत्.) 1. न चुराने योग्य, जो हरण करने योग्य न हो, जो चुराया न जा सके, सुस्थिर। **विज्ञो.** हरणीय।

**अहराम** पुं. (अर.) 1. पुरानी इमारत, पुराना भवन 2. मिस्र के पिरामिड **वि.** हरम का बहु.

**अहरी** स्त्री. (देश.) 1. वह स्थान जो पशुओं के पानी पीने के लिए चौड़ी नाली के रूप में बनाया जाता है 2. प्याऊ।

**अहर्निश** वि./अव्य. (तत्.) 1. रात-दिन 2. सदा, नित्य 3. निरंतर अविराम।

**अहर्मुख** पुं. (तत्.) भोर, उषाकाल, प्रातःकाल, सवेरा।

**अहल** वि. (तत्.) बिना जोता हुआ खेत, जिस खेत पर हल न चलाया गया हो।

**अहलकार** पुं. (फा.) दे. अहलकार।

**अहल्या** वि. (तत्.) 1. हल चलाने के अयोग्य धरती 2. रामकथा के अंतर्गत गौतम ऋषि की पत्नी जिसका उद्धार राम ने किया था।

**अहवाल** पुं. (अर.) दे. अहवाल

**अहसान** पुं. (अर.) 1. एहसान, उपकार करने वाले के प्रति होने वाला भाव 2. कृपा, अनुग्रह 3. उपकार, भलाई।

**अहसान फरामोश** वि. (अर.फा.) एहसान-फरामोश, उपकार न मानने वाला, कृतघ्न।

**अहसानमंद** वि. (अर.+फा.) एहसानमंद, कृतज्ञ, उपकार मानने वाला।

**अहसास** पुं. (अर.) 1. एहसास, अनुभव, अनुभूति 2. ध्यान, ख्याल 3. पाना 4. देखना।

**अहस्त** वि. (तत्.) बिना हाथ वाला, जिसके हाथ कटे हों, लूला।

**अहस्तक्षेप** पुं. (तत्.) राज. हस्तक्षेप न करने की स्थिति, भाव या नीति।

**अहस्तक्षेप की नीति** स्त्री. (तत्.) किसी भी विषय में असंबंधित व्यक्ति द्वारा टाँग न अड़ाने की नीति अर्थ. ऐसी नीति जो आर्थिक व्यवस्था, विशेषतः उद्योग और व्यापार के क्षेत्र में स्वायत्तता की पक्षधर हो, अर्थात् सरकार का उसमें न्यूनतम हस्तक्षेप हो पर्या. अबंध नीति।

**अहस्तांतरणीय** वि. (तत्.) जिसे दूसरे के हाथों में न सौंपा जा सके, जो दूसरे को न दिया जा सके, जिसका स्वामित्व न बदला जा सके।

**अहा** अव्य. (तत्.) 1. आश्चर्य, खेद, शोक सूचित करने वाला (विस्मयबोधक) शब्द।

**अहाता** पुं. (अर.) परिसर, घोड़ा, बाड़ा, चारदीवारी, परकोटा।

**अहाहा** अव्य. (तत्.) प्रसन्नता और प्रशंसा अभिव्यक्त करने के लिए उद्गार-सूचक शब्द।

**अहि** पुं. (तत्.) 1. साँप 2. राहु 3. सूर्य।

**अहिंसक** वि. (तत्.) जो हिंसा न करे, जो किसी को दुःख न दे, जिससे किसी को पीड़ा न पहुँचे।

**अहिंसा** स्त्री. (तत्.) जैन दर्श. हिंसा-कार्य में प्रवृत्त न होने की स्थिति जिसके तीन अंग हैं- किसी प्राणी को न मारना, मन, वचन, कर्म से किसी का अहित चिंतन न करना, उसे पीड़ित न करना योग. पाँच प्रकार के यमों में प्रथम।

**अहिंसावादी** वि. (तत्.) 1. अहिंसा के सिद्धांत को मानने वाला 2. अहिंसा का पालन करने वाला।

**अहिंस** वि. (तत्.) जो हिंस्र या हिंसक न हो जो हिंसा न करे, अहिंसक।

**अहिक** पुं. (तत्.) 1. अंधा सर्प 2. ध्रुव तारा प्रत्यय. दिनयादिनों वाला (समास में संख्यावाची शब्दों के साथ प्रयुक्त जैसे- साप्ताहिक, दशाहिक)।